HISTORY, B.A. Hons II - PAPER II

The Revolution of 1830 (1830 ई. की क्रांति)

CAUSES :→ यूरोप के इतिहास में 1830 ई. को क्रांति का वर्ष माना जाता है। यह क्रांति फ्रांस से प्रारम्भ होकर लगभग सम्पूर्ण यूरोप में फैल गयी। वास्तव में इस क्रांति के मूल में शासकों की रूढ़िवादी नीति के विरोध में जनता का विरोध था। 1815 ई. से 1830 ई. के दौर में यूरोप में उन सरकारों का राज था जो किसी भी प्रकार के परिवर्तनों के विरुद्ध थीं।

1830 ई. से पूर्व फ्रांस में राजसत्तावादियों का प्राधान्य था। धीरे-धीरे इनकी प्रतिक्रियावादी एवं अत्याचारी नीति का विरोध बढ़ता जा रहा था। 1824 ई. में लुई XVIII की मृत्यु हो गयी, उसके बाद उसका भाई आर्तुआ का काउंट चार्ल्स दशम् के नाम से फ्रांस की राजगद्दी पर बैठा। चार्ल्स दशम् के गद्दी पर बैठते ही फ्रांस की राजनीतिक स्थिति ने पुनः एक गम्भीर मोड़ लिया। चार्ल्स दशम् कट्टर राजतंत्रवादी पार्टी का नेता था और इससे किसी भी प्रकार के उदारवादी कार्यों की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी।

1830 ई. की फ्रांसीसी राज्य-क्रांति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(i) चार्ल्स दशम् की प्रतिक्रियावादी नीति :- चार्ल्स X घोर प्रतिक्रियावादी था। इतिहासकार लिप्सन के अनुसार "आर्तुआ का चार्ल्स दसवें के नाम पर शासक बनना प्रतिक्रियावाद को प्रेरणा मिलना था। यह नया राजा बहुत आरम्भ से ही स्वयं को राजतन्त्रवादियों का नेता मानता था।" सिंहासन पर बैठते समय उसने लुई XVIII द्वारा घोषित चार्टर पर चलने की बात कही थी, लेकिन सिंहासन हाथ में आते ही उसकी प्रतिक्रियावादी नीति यथाशीघ्र सामने आने लगी। वह राजा के दैवी अधिकार के सिद्धांत का समर्थक था। उसका कहना था कि इंग्लैण्ड के राजा की भाँति वैध शासक के रूप में रहने की अपेक्षा मैं जंगल में लकड़ी काटना अधिक पसन्द करूँगा।

(ii) चार्ल्स द्वारा चर्च की प्रधानता :- चार्ल्स X चर्च की सत्ता का समर्थक था। वह चर्च के लिए अपना सिंहासन भी छोड़ने के लिए तैयार था। वह चाहता था कि चर्च और राज्य एक हो जायें। वह चर्च की शक्ति को पुनः सुदृढ़ करना चाहता था। 1789 ई. की क्रांति के दौरान चर्च से शिक्षा देने का जो अधिकार छीन लिया गया था वह अधिकार उसे पुनः दे दिया गया। फ्रांस के विश्वविद्यालय का सर्वाध्यक्ष एक पादरी को बनाया गया तथा कैथोलिक धर्म विरोधी अध्यापकों का बहिष्कार किया जाने लगा। चर्च की आलोचना करने वाले व्यक्ति को सात वर्ष के कठोर कारावास

Ajanta Officer

को दण्ड देने की व्यवस्था की गयी। इसके अतिरिक्त उसने अपने उत्तराधिकारी ड्यूक वार्दो को शिक्षा के लिए शेरे नामक एक कट्टर कैथोलिक को नियुक्त किया जिससे राजकुमार भी कैथोलिक विचारों का बन जाये। धार्मिक उत्सवों को वह राजकीय रूप से प्रोत्साहन एवं सहायता देता था, अतः उसने धार्मिक दल को फ्रांस में शक्तिशाली बना दिया। वेलिंग्टन ने उसके सम्बंध में लिखा, चार्ल्स दशम के सामने जेम्स द्वितीय के पतन का उदाहरण कोई मूल्य नहीं रखता। वह जो राज्य स्थापित करने जा रहा है जोकि भी पादरियों द्वारा, पादरियों का और पादरियों के लिए है।

(iii) क्रांति के सिद्धांतों तथा मान्यताओं की अवहेलना:- चार्ल्स दशम क्रांति के सिद्धांतों तथा जनता के अधिकारों का घोर विरोधी था। प्रारम्भ में उसने मेरी अन्तायनेत के साथ मिलकर क्रांति को दबाने का असफल प्रयास किया था, असफल होने के बाद वह विदेश भाग गया। वहाँ भी वह निरंतर क्रांति के विरोध का प्रचार करता रहा, कालान्तर में फ्रांस के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् उसने फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांतों तथा मान्यताओं का खुलकर विरोध किया। उसने प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर दी। पत्रिकाओं पर भी कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया। प्रेस के नियंत्रण के विरोध में काफी प्रदर्शन हुए। इस प्रदर्शन में National Guards ने भी भाग लिया, अतः ~~क्या~~ National Guards को भी भंग कर दिया गया।

(iv) राष्ट्रीय धन का अपव्यय:- सिंहासन पर बैठते ही सर्वप्रथम चार्ल्स X ने उन कुलीन एवं पादरियों की दयनीय अवस्था ~~का~~ पर विशेष ध्यान दिया जिनकी सम्पत्ति फ्रांसीसी क्रांति के दौरान छीन ली गयी थी। इस जब्त की हुई सम्पत्ति को लुई XVIII के आज्ञा पत्र द्वारा वैधानिक रूप से स्वीकार कर लिया गया था, इसलिए कुलीन या पादरी इसे पुनः प्राप्त नहीं कर सकते थे। अतः चार्ल्स ने ऐसे कुलीनों एवं पादरियों को मुआवजा देने का निश्चय किया। उसके इस कार्य में राजकीय कोष से दो करोड़ अस्सी लाख फ्रांक खर्च हो गये। इससे राष्ट्र को बहुत हानि हुई, लेकिन इस क्षतिपूर्ति का एक नया ~~ही~~ तरीका निकाला गया जो चार्ल्स के लिए घातक सिद्ध हुआ। उसने जनसाधारण के लिए ऋण के सूद की दर पाँच प्रतिशत से घटाकर तीन प्रतिशत कर दी। सूद की दर घटाने से सरकारी बॉण्ड खरीदने वाले मध्यवर्ग को काफी क्षति उठानी पड़ी। अतः मध्यवर्ग की आय काफी कम होने से वह सरकार से काफी रुष्ट हो गया।

(v) **उदारवादियों का प्रभाव**:- चार्ल्स X की अत्यधिक प्रतिक्रियावादी नीति का परिणाम यह हुआ कि उदारवादियों का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया। इसका स्पष्ट उदाहरण 1827 ई० के आम चुनावों में देखने को मिलता है। इस चुनाव में प्रतिक्रियावादियों ने मतदाताओं पर अनेक प्रकार के दबाव डाला, लेकिन फिर भी राजसत्तावादियों के 125 के जवाब में उदारवादियों को 428 स्थान प्राप्त हुए। इस परिणाम से चार्ल्स X काफी चिन्तित हुआ, अतः उसने चैम्बर को भंग कर दिया। इसके बाद चुनाव पुनः हुआ, लेकिन इस बार भी उदारवादियों को ही बहुमत प्राप्त हुआ।

(vi) **तात्कालिक कारण**:- चार्ल्स X का सेण्ट क्लाउड का अध्यादेश -

1830 ई० की फ्रांसीसी क्रांति का तात्कालिक कारण चार्ल्स के सेण्ट क्लाउड के अध्यादेश थे। चार्ल्स दशम ने अपने विरोधियों के प्रभाव को नष्ट करने के उद्देश्य से अध्यादेश जारी किया जिसके द्वारा चार दमनकारी कानून लागू किये गये। ये कानून थे -

(अ) प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
(ब) नव-निर्वाचित प्रतिनिधि-सभा को उसकी अवधि से पूर्व ही भंग कर दिया गया।
(स) सम्पत्ति-योग्यता को ऊँचा करके मताधिकार को अत्यंत सीमित कर दिया गया। इस कानून द्वारा 75 प्रतिशत नागरिक मताधिकार से वंचित हो गये।
(द) सभा की कार्यावधि 7 से 5 वर्ष कर दी गयी।

चार्ल्स दशम् का यह अध्यादेश वास्तव में प्रतिक्रिया की अन्तिम सीमा थी। जनता और पत्रकारों ने इस अध्यादेश का प्रबल विरोध किया। उदारवादी, गणतंत्रीय विचार वाले, मजदूर तथा बोनापार्ट पक्ष वाले सब चार्ल्स X के विरोधी हो गये। अतः इन चार अध्यादेशों ने फ्रांस की 1830 ई० की क्रांति का विस्फोट कर दिया। चारों ओर क्रांति के नारे लगाये जाने लगे। अंत में 27 जुलाई को क्रांति प्रारम्भ हो गयी।

S.N. [signature]
12.9.2020